हमारा पर्यावरण और प्लास्टिक प्रदूषण

उमेश कुमार

शोधार्थी (शिक्षक प्रशिक्षण विभाग)
श्रीदुर्गा जी पी0 जी0 कालेज, चण्डेश्वर, आजमगढ़
सम्बद्ध– वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, उ0प्र0
Email Id : umeshkg121@gmail.com

मानव को समाज में अनुकूलन करने के लिए समाज के चारो तरफ के पर्यावरण से समन्वय करना जरूरी होता है। मनुष्य का वातावरण जैसा होता है, वैसा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है, और उन व्यक्तियों के द्वारा ही उसी प्रकार के समाज का निर्माण होता है। इसलिए मानव के विकास के लिए यह आवश्यक है कि उसके चारो तरफ का वातावरण या पर्यावरण ठीक हो, क्योंकि स्वच्छ पर्यावरण के बिना और स्वच्छ पर्यावरण के लिए लोगो का जागरूक होना आवश्यक होता है।

प्राचीन समय से ही हमारे समाज में पर्यावरण का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, और पर्यावरण के प्रति हम पहले भी काफी जागरूक थे। पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है ''वह आवरण जो हमें चारो ओर से घेरे हुए है'' इस प्रकार प्रकृति में हमारे चारो ओर पाये जाने वाले समस्त जैविक तथा अजैविक तत्व पेड़, पौधे, जन्तु एवं वायु जल, मृदा इत्यादि सभी मिलकर हमारे पर्यावरण की रचना करते है। पर्यावरण से तात्पर्य हमारे चारो ओर के उस वातावरण या परिवेश से है, जिससे हम घिरे हुए है। पर्यावरण उन सभी बाहरी दशाओं और प्रभावों का योग है, जो प्राणी के जीवन और विकास पर प्रभाव डालते है भारतीय चिन्तन में भी कहा गया है कि– ''क्षिति जल पावक गगन समीरा पंच रचित यह अधम शरीरा'' जिसका तात्पर्य है कि हमारा यह शरीर धरती, जल, अग्नि, आकाश और वायु से मिलकर बना है। यह चिन्तन आज वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सही माना गया है, और एक अच्छे पर्यावरण का अर्थ है इन सभी घटकों के मध्य समुचित संतुलन, इस बात से हम इनकार नही कर सकते हैं, कि मानव ने अपनी सुविधा, विकास या मनोरंजन के लिए पर्यावरण से जाने अनजाने में छेड़–छाड़ की है, जिसके परिणामस्वरूप न सिर्फ जैविक व्यवस्था अस्त–व्यस्त हुई है बल्कि अजैविक घटकों में भी संगठनात्मक तथा गुणात्मक परिवर्तन हुए है। यथा मानव ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जंगलों को काटा, जंगली जीवों को पालतू बनाया, ऊर्जा प्राप्ति के लिए नदियों की दिशा परिवर्तित कर उस पर बड़े–बड़े बाँध बना कर बिजली उत्पादन आदि के संयन्त्र लगायें, घरेलू और औद्योगिक इकाइयों से निकले अपशिष्टों के द्वारा जल स्रोतो एवं वायु मण्डल को प्रदूषित किया, रसायनिक खादों, उर्वरको एवं नवीन वैज्ञानिक अविष्कारों का बिना विचार किये उसका अत्यधिक उपयोग पर्यावरण को क्षति पहुँचा रही है। आज के सभी विकासउन्मुख कार्यो के साथ–साथ मानव

निर्मित परितन्त्र का निर्माण प्रकृति पर विजय पाने की लालसा से कार्य किया जा रहा है, जिनके सम्मिलित परिणाम स्वरूप पर्यावरण प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों की क्षति, परिर्वतित भौगोलिक स्वरूप तथा ऊर्जा संकट के रूप में हमारे सामने है, जो कि न सिर्फ मानव बल्कि सम्पूर्ण जैव जाति के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया हैं। पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने के लिए आज अवश्यकता है पर्यावरण शिक्षा की इसी उद्देश्य के तहत 5 जून को पूरे विश्व में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। विश्व के सभी देश आज किसी न किसी प्रकार के पर्यावरणीय संकट से ग्रस्त है । पर्यावरण संकट को शिक्षा के माध्यम से कुछ कम तो किया जा सकता है किन्तु यह सोचे कि शिक्षा से ही सब सम्भव है, तो ऐसा सम्भव नही है। **श्रीमती इंदिरा गाँधी ने (1987) में प्रथम अन्तराष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन में कहा था की अधिक जनसंख्या गरीबी को बुलावा देती है और गरीबी प्रदूषण को जन्म देती है।**

आज वर्तमान समय में सम्पूर्ण मानव समाज के लिए एक वैज्ञानिक अविष्कार, जीवन को सुविधाजनक तो को बनाया है, लेकिन आज यह खतरनाक रूप ले लिया है जिसे हम प्लास्टिक कहते है। प्लास्टिक एक ग्रीक शब्द है जो प्लास्टिकोष शब्द से निकला है जिसका अर्थ है बनाना। प्लास्टिक का अविष्कार 1862 में इग्लैण्ड के ऐलेक्जेंडर पारकींस ने किया था। भौतिक युग में प्लास्टिक के दुष्परिणाम से बेखबर हमारा समाज इसके उपयोग का इस कदर आदि हो गया है कि यह आज जीवन जीने का एक अंग सा बन गया है, वर्तमान समय को प्लास्टिक युग कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी इसलिए की आज मानव के जीवन में प्लास्टिक का महत्वपूर्ण हस्तक्षेप हो गया है, और दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है। दुनिया के सभी देश इसको विभिन्न रूपों में इस्तेमाल कर रहें हैं सबसे चिन्ता का विषय यह है कि इसके बढ़ते दुष्परिणाम को जानते हुए भी इसके इस्तेमाल से हम बच नही पा रहे है, स्वार्थी एवं उपभोक्तावादी मानव ने पर्यावरण को प्लास्टिक के अन्धाधुन्ध प्रयोग से जिस तरह से प्रदूषित किया है और करता जा रहा है उससे पूरा वातावरण प्रदूषित हो रहा है। प्लास्टिक मानव के लिए एक जहर के समान हो गया है जो पर्यावरण को नुकसान पहुचा रहा है हालाकि इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि प्लास्टिक निर्मित वस्तुएं गरीब एवं मध्यमवर्गीय लोगों का जीवन स्तर सुधारने में मदद भी करता है, प्लास्टिक ऐसी वस्तु बन चुकी है कि यह पूजा स्थल से लेकर रसोई घर तथा पठन–पाठन की सामग्री में भी उपयोग किया जाता है, और यह आज हजारों लाखों लोगों के रोजगार से भी जुड़ गया है।

पर्यावरण से तात्पर्य हमारे चारो ओर के उस वातावरण या परिवेश से है, जिससे हम घिरे हुए है। पर्यावरण उन सभी बाहरी दशाओं और प्रभावों का योग है, जो प्राणी के जीवन और विकास पर प्रभाव डालते है भारतीय चिन्तन में भी कहा गया है कि– ''क्षिति जल पावक गगन समीरा पंच रचित यह अधम शरीरा'' जिसका तात्पर्य है कि हमारा यह शरीर धरती, जल, अग्नि, आकाश और वायु से मिलकर बना है।

प्लास्टिक का वह रूप जो आज मानव और पर्यावरण के लिए अत्यधिक खतरा बनता जा रहा है वह है जो नॉन–बायोडिग्रेडेबल होते है जो प्राकृतिक प्रक्रियाओं यथा बैक्टिरिया द्वारा अपघटित नही होते है, ये प्लास्टिक रासायनिक पदार्थो के छोटे–छोटे यूनिट से मिलकर बना एक बड़ा यूनिट है जो पॉलीमर कहलाता है। प्लास्टिक अपने वजन से 2000 गुना ज्यादा वजन

उठा लेता है जिसके कारण उद्योग से लेकर आम लोगों तकयह लोक प्रिय है, यह मानव जीवन को सुविधाजनक तो बनाया, लेकिन आज इसके भयंकर परिणाम भी हमको देखने मिल रहे है। आज चारो तरफ विभिन्न रूपों में जो प्रदूषण है उसमें प्लास्टिक का बहुत योगदान है। कुल कचरें का लगभग 10% प्लास्टिक ही होता है उसमें से भी जो प्लास्टिक इस्तेमाल किया जाता है उसमें से प्लास्टिक का सबसे खतरनाक रूप जिसे सिंगल यूज प्लास्टिक कहते है वह कुल प्लास्टिक का 40% होता है सिंगल यूज प्लास्टिक से तातपर्य यह है कि ऐसा प्लास्टिक जिसे हम एक बार इस्तेमाल करने के बाद फेक देते है, उसका हम दोबारा प्रयोग नही करते है आज यह सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग पर्यावरण के लिए सबसे खतरनाक हो गया है, हम देखते है कि प्लास्टिक से बनी थैली, पानी की बोतल, दूध की थैली, प्लास्टिक के गिलास, चम्मच, थाली, दैनिक जीवन में उपयोग करने वाले टॉफी– बिस्कुट के रैपर, कप–प्लेट, नमकीन के पैकेट आदि आसानी से नष्ट नही होते, आज शादी समारोहो में हम जाते है तो थाली के साथ–साथ जितनी बार हम कुछ खाते है, उतनी बार हम पानी के लिए प्लास्टिक गिलास प्रयोग करते है, जितने प्रकार के हम व्यंजन खाते है उतनी बार हम कांटा चम्मच का इस्तेमाल करते है, यह पर्यावरण के लिए उचित नही है।

हमारे देश की विडम्बना यह है कि प्लास्टिक के इस्तेमाल पर पाबन्दी है, लेकिन इसके बावजूद इसका इस्तेमाल बदस्तूर जारी है इस बावत राष्ट्रीय हरित अधिकरण (National Green Tribunal- NGT) ने कड़ा ऐतराज जताया है अधिकरण ने कहा है कि जब प्लास्टिक पर प्रतिबन्ध है तो इसे कड़ाई से लागू किया जाय । एक रिपोर्ट के अनुसार हर साल भारत में 94. 6 टन कचरे का उत्पादन होता है, जिसका 40ः केवल प्लास्टिक का कचरा होता है। भारत में लगभग 10 से 15 हजार ईकाइयां प्लास्टिक का उत्पादन करती है, आज भारत में पालिथिन की खपत 3 से 4 लाख टन हो गया है, इसके साथ ही दुनिया में हर साल 300 मिलियन प्लास्टिक का उत्पादन होता है जिसमें से लगभग 50 प्रतिशत से ज्यादा को एक बार इस्तेमाल करके फेक दिया जाता है प्लास्टिक को नष्ट होने में लगभग 500 से 1000 साल लगता है । हर साल दुनियां में 500 अरब प्लास्टिक बैग्स का इस्तेमाल होता है, हर साल 80 लाख टन प्लास्टिक महासागरों में पहुचता है, जो प्रति मिनट एक कूड़े से भरे ट्रक के बराबर है, दुनिया में हर मिनट 10 लाख प्लास्टिक की बोतलो की खरीद होती है। वैज्ञानिकों के अनुसार 2020 के अन्त तक दुनिया में 20 अरब टन प्लास्टिक कचरा जमा हो जायेगा, आज प्रतिवर्ष 8.6ः प्लास्टिक का उत्पादन बढ़ रहा है, तथा 90% जीव–जन्तु किसी न किसी रूप में प्लास्टिक खा रहें हैं, ये प्लास्टिक समुंद्र में जाकर छोट–छोटे टुकड़े में टूट जाता है। सीवर, नाली, नदी, के माध्यम से प्लास्टिक समुंद्र में जाता है जिसे समुंद्री जीव–जन्तुओं का जीवन प्रभावित होता है, तथा उनका जीवन संकट में पड़ जाता है।

प्लास्टिक को साइज के अनुसार तीन वर्गो में बांटा गया है–

1– 0-1**m.m.** ls 5**m.m.** तक ———माइक्रोप्लास्टिक

2– 5**m.m.** ls 25**m.m** तक ——— मेसोप्लास्टिक

3– 25**m.m.** से ज्यादा ————————मैक्रोप्लास्टिक

अन्तराष्ट्रीय पत्रिका साइन्स रिपोर्ट के अनुसार– सिर्फ 9ः प्लास्टिक रिसाइकिल होता है, 12% जला दिया जाता है तथा 79% हमारे पर्यावरण का हिस्सा है।

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार– प्रतिदिन दिल्ली में 690 टन, चेनई में 629 टन, कोलकाता में 426 टन, मुम्बई में 408 टन प्लास्टिक कचरा फेका जाता है तथा देश में 56 लाख टन कचरे का उत्पादन होता है।

जारजिया यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर जेना जैमबेक का कहना है कि– अधिकांशतः प्लास्टिक का जैविक क्षरण नही होता यही अहम वजह है कि आज पैदा किया गया प्लास्टिक कचरा सैकड़ो हजारों साल तक हमारे साथ बना रहेगा, जो हमार जीवन और पर्यावरण से खेलवाड़ करता रहेगा, जिसकी भारपाई असम्भव होगी, ऐसे में हमें इसके उत्पादन और निस्तारण को लेकर गम्भीरता पूर्वक विचार किये जाने की बेहद जरूरत है।

फ्लोरिडा स्थित स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क की प्रोफेसर शेरीमेशन कहती है कि– प्लास्टिक हमारे समाज में व्यापक रूप से मौजूद है, इसे यूँ कहा जाय कि यह अब हमारे समाज में रच बस गया है, तो कुछ गलती नही होगी, सर्वव्यापी है, यह हवा, पानी, समुद्री भोजन और बीयर से लेकर नमक तक में अपनी पहुँच बना चुका है।

सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्ति के लिए हमारे देश भारत ने भी दुनिया के साथ–साथ विभिन्न प्रयास किये है, और इसके खिलाफ अभियान छेड़ दिया है इसके लिए ही प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 15 अगस्त को लालकिला की प्राचीर से सिंगल यूज प्लास्टिक को बन्द करने की घोषणा कि, तथा 2 अक्टूबर से पूरे देश में सिंगल यूज प्लास्टिक को पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दिया गया। सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ प्रधानमंत्री जी ने 25 अगस्त 2019 को मन की बात कार्यक्रम में भी देश के नागरिकों से इसके खिलाफ अभियान चलाने तथा जागरूकता बढ़ाने की अपील की थी । भारत में 2022 तक पूरी तरीके से सिंगल यूज प्लास्टिक को बन्द करने का लक्ष्य रखा है। भारत सरकार ने इसके खिलाफ 3 चरणों में अभियान चलाने का फैसला किया है–

1– राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण जागरूकता अभियान चलाया जायेगा ।
2– विभिन्न सरकारी एजेन्सियाँ एक बार इस्तेमाल होने वाली प्लास्टिक जमा करेगी
3– जमा प्लास्टिक रिसाइक्लिंग किया जयेगा ।

भारत में Plastic Management Rules, 2016 बनाया है जिसके तहत 50 माइक्रोन से कम मोटाई वाले प्लास्टिक पर प्रतिबन्ध लगाता है, और 2 साल के भीतर नान–रिसाइकेबल और मल्टीलेवल प्लास्टिक के निर्माण और बिक्री को चरणबद्ध तरीके से हटाने को निर्देशित करता है। इसके अतिरिक्त पर्यावरण मंत्रालय ने भी Plastic waste Management (Amendment) Rules, 2018 अधिसूचित किया है जिसके तहत रिसाइकल न हो सकने वाले डनसजप.संलमतमक च्सेंजपब को चरणबद्ध तरीके से बाहर करना है इसमें उत्पादक और निर्यातकों के लिए सेन्ट्रल रजिट्रेशन सिस्टम बनाने के भी निर्देश दिये गये है। इसके अलावा Solid Waste Management Rules, 2016 के अनुसार सूखे कचरे को नीले बॉक्स और गीले कचरे को हरे बॉक्स में डालने और उनकेक स्रोत से ही अलग–अलग करने की बात कही गयी है। विश्व पर्यावरण दिवस 2018 की मेजबानी भारत ने की थी, जिसका थीम "Beat Plastic

Pollution" था जिसका उद्देश्य नान बायोडिग्रेडेबल से पैदा हुई स्वास्थ्य सम्बन्धी चुनौतियों और पर्यावरण के सम्बन्ध में जागरूकता पैदा करना था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने ब्व्च्14ए 2019 में जो नई दिल्ली में आयोजित हुआ था, उसमें भी सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ कदम उठाने के लिए दुनिया से आवाहन किया, इसके साथ ही प्रधानमंत्री जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में भी सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ भारत में चलाये जाने वाले अभियान का जिक्र किया । प्रधान मंत्री जी को पर्यावरण पर किये गये विभिन्न कार्यो के लिए 73वें यू.एन. जनरल असेम्बली ने चैम्पियन ऑफ अर्थ पुरस्कार दिया है, इन कार्यो में 2022 तक सिंगल यूज प्लास्टिक को समाप्त करने की प्रतिज्ञा भी शामिल है।

आज की यह भयावह समस्या के समाधान के लिए यह आवश्यक है कि जागरूकता के साथ साथ इसका कम से कम इस्तेमाल किया जाय, इसके लिए यह आवश्यक है कि घर से निकलते समय कपडे, जूट आदि के झोले का इस्तेमाल किया जाय इसके साथ ही दोबारा इस्तेमाल होने वाले बोतलों बर्तनों को बढ़ावा दिया जाना जरूरी है तथा इको– फ्रैन्डली बैग्स का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करें, बच्चों के खिलौने लकड़ी अथवा अन्य इकोफ्रैन्डली बने हुए सामानो को खरीदें, तथा स्थानीय स्तर पर निर्मित सामानों को खरीदें, प्लास्टिक की रिसाइक्लिंग जरूरी है इस लिए डस्टवीन का प्रयोग करें। हमें लम्बे समय तक खाद्य पदार्थो को सुरक्षित रखने के लिए शीशे और मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करना चाहिए, प्लास्टिक से बने सजावटी समानो का प्रयोग न करें । हम देखतें हैं कि घरों में साज–सज्जा के लिए प्लास्टिक की वस्तुओं का काफी प्रयोग हो रहा है, इसके साथ ही हमें अपनी सोच बदलनी पड़ेगी, कहते है कि वायु है तो आयु है, अर्थात स्वच्छ पर्यावरण के बिना मानव का जीवन सम्भव नही है ।

इसके साथ ही सिंगल यूज या डिस्पोजेबल प्लास्टिक के उपयोग में कमी लाते हुए इसका प्रयोग बिलकुल बन्द करना चाहिए और बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाय । प्राकृतिक वातावरण में डाले जाने वाले कचरे पर रोक लगायी जाय और उसका निपटान तथा प्रबन्धन किया जाय, इसके प्रबन्ध में 3R के सिद्धान्त ;त्मकनबमए त्मनेमए त्मबलबसमद्ध को अमल में लाने की जरूरत है, अब तो कचरे के प्रबन्ध के लिए 5R का सिद्धान्त (Reduce, Reuse, Recycle, Recovery and Redesign) पर बल दिया जा रहा है इसको लागू करने के लिए स्थानीय स्तर पर प्रबन्ध की आवशकता है, इसके साथ ही प्लास्टिक को बनाने से लेकर कचरे के प्रबन्धन तक के विभिन्न चरणों में प्रभावी वेस्ट मैनेजमेंन्ट पॉलिसी को अपनाना होगा । प्लास्टिक कचरे का उपयोग निर्माणी कार्यो जैसे–सड़क आदि बनाने में इसका उपयोग किया जा सकता है, प्लास्टिक प्रदूषण के खिलाफ सभी देशों को मिलकर साथ काम करना होगा, साथ ही एक अन्तराष्ट्रीय सन्धि को अमल में लाना होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1– गोयल एम0 के0, पर्यावरण शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स ।

2– सती जगदीश प्रसाद, पालिथिन प्रदूषण समस्या एवं निदान, देहरादून ।

3–अग्रवाल एस0एल0 लीगल कन्ट्रोल ऑफ एनवायरमेन्टल पोलुशन, लॉ इंस्टीच्यूट

पब्लिकेशन, मुम्बई
4– डा0 एन0 माहेश्वर स्वामी, ''लॉ रिलेटिंग टू एनवायरमेन्टल पोलुशन एण्ड प्रोटेक्शन'' एशिया ला हाऊस हैदाराबाद
5– कमीशन आन एनवायरमेन्ट एण्ड डेवलपमेन्ट, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (1987)
6– द हिन्दू, इण्डियन एक्सप्रेस, टाइम्स ऑफ इंण्डिया, हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण
7– राज्यसभा टी0 वी0